

भारतीय मसाले: स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक

(‘डेली योमुरी’ जापान के समाचार पत्र में प्रकाशित मेरा साक्षात्कार - हिंदी में अनुवाद)

- शशि गांधी

दिल्ली की एक भारतीय खाना पकाने की शिक्षिका शशि गांधी ने लगभग कई साल पहले जब पहली बार यहां कदम रखा था तो उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह जापान में लंबे समय तक रहेंगी, सिर्फ इसलिए क्योंकि उन्हें अपने देश से कोई मसाला नहीं मिल रहा था।

वह याद करती हैं, “जब मैं यहां पहुंची, तो मुझे किराने की दुकानों, सुपरमार्केट या कहीं भी कोई भारतीय मसाला नहीं मिला।”

जापान के बारे में यह स्वीकार करना उनके लिए सबसे कठिन बात थी, उन्होंने कहा, मसाले - विशेष रूप से हल्दी, जीरा और धनिया सहित सारे मसाले - भारतीय व्यंजनों के आवश्यक घटक हैं। उन्होंने कहा, “अगर आपके पास एक भी बुनियादी मसाले की कमी है, तो आप भारतीय खाना नहीं बना सकते।”

लेकिन पिछले कुछ वर्षों में आहार में बहुत बदलाव आया है। इस देश में विदेशी भोजन का आगमन हो चुका है और दुनिया भर के मसाले और सामग्री आसानी से उपलब्ध हैं।

बिना किसी कठिनाई के, कोई भी देश की दुकानों में विक्री पर विशिष्ट भारतीय मसालों की एक विस्तृत विविधता पा सकता है। इसके अलावा, कुछ सुपरमार्केट विशेष रूप से भारतीय खाद्य पदार्थों के लिए अलमारियाँ समर्पित करते हैं।

गांधी इस प्रवृत्ति से प्रसन्न हैं। “मुझे भारतीय मसाले खरीदने के लिए विशेष स्थानों, जैसे उएनो (ताईतों कु, टोक्यो) की यात्रा करनी पड़ती थी, और वे काफी महंगे होते थे। लेकिन अब मसाले बेचने वाली कई दुकानें हैं, इसलिए उन्हें प्राप्त करना बहुत आसान हो गया है,” उसने कहा।

“विशेष रूप से असामान्य मसालों को छोड़कर, लगभग हर प्रकार का मसाला, कोने के आसपास ही उपलब्ध है। इसलिए, भारतीय मसालों की उपलब्धता के संदर्भ में, मुझे जापान में रहने और भारत में रहने के बीच कोई अंतर नहीं दिखता है,” उसने कहा।

गांधी जापानी छात्रों को भारतीय खाना पकाने की कला सिखाते हैं, जो स्वस्थ भारतीय भोजन पकाने का तरीका सीखने के लिए कक्षाओं में जाते हैं।

“मेरी कुकिंग क्लास के विद्यार्थियों में अधिकतर गृहिणियाँ और युवा महिलाएँ शामिल हैं। वे मेरी कक्षाओं में आते हैं क्योंकि वे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं और भारतीय खाना बनाना सीखने के इच्छुक हैं क्योंकि इसमें कई प्रकार के कम तेल वाले व्यंजन होते हैं जिनमें बहुत सारी सब्जियाँ होती हैं।”

“किसी को यह धारणा हो सकती है कि सभी भारतीय भोजन तीखा और मसालेदार हैं। वास्तव में, हालांकि यह सच है कि हम लगभग हर भोजन में कई तरह के मसाले डालते हैं, केवल मिर्च ही है जो भोजन में तीखा स्वाद जोड़ती है। बाकी सभी चीजें बिल्कुल भी तीखा नहीं हैं, लेकिन आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छी हैं।” उसने कहा।

उत्तर-दक्षिण विभाजन

भारत जापान से दस गुना बड़ा है। यह उत्तर में हिमालय से लेकर, जहां सर्दियों में तापमान शून्य से नीचे तक गिर जाता है, दक्षिण

में हिंद महासागर के पास अधिक उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों तक फैला हुआ है, जहां वार्षिक औसत तापमान 32 डिग्री है।

स्थानीय जलवायु की विविधता को दर्शाते हुए, भारतीय व्यंजन क्षेत्रीय मतभेदों को दर्शाते हैं, इसलिए, यह सटीक रूप से परिभाषित करना मुश्किल हो सकता है कि भारतीय भोजन क्या है।

हालांकि, देश के उत्तरी और दक्षिणी भागों के बीच एक “खाद्य सीमा” यकीनन खींची जा सकती है।

“लगभग 80 से 90 प्रतिशत मसाले आमतौर पर उत्तर और दक्षिण में उपयोग किए जाते हैं। लेकिन, दक्षिणी क्षेत्रों के लोग उत्तरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक मिर्च का उपयोग करते हैं क्योंकि वे हल्का स्वाद पसंद करते हैं और पनीर और दही का बहुत अधिक उपयोग करते हैं,” गांधी ने कहा।

दोनों क्षेत्रों के बीच एक और अंतर यह तथ्य है कि उत्तरी स्थानीय लोग चपाती खाना पसंद करते हैं - पूरे गेहूं के आटे से बनी एक गोल, फ्लैटब्रेड - जबकि दक्षिणी लोग चावल पर रहते हैं, इसे दिन में तीन बार खाते हैं।

“रोटी उत्तरी क्षेत्रों में किसी भी व्यंजन के साथ परोसा जाने वाला मुख्य भोजन है, इसलिए हमारे पास इसके कई अलग-अलग प्रकार हैं। उदाहरण के लिए, गाजर, मूली, आलू और बीन्स से बनी ब्रेड,” उसने कहा।

तंदूरी चिकन, संभवतः जापान में भारतीय रेस्टोरेंट में सबसे लोकप्रिय व्यंजनों में से एक है, इसकी उत्पत्ति भी भारत के उत्तरी भाग से हुई है।

अपनी उंगलियों का प्रयोग करें

भारतीय व्यंजनों के लजीज स्वादों का आनंद लेने के लिए अपनी उंगलियों का इस्तेमाल करना जरूरी है। “अपनी उंगलियों का उपयोग करके - चाकू और कांटे का नहीं - आप भोजन का अधिक आनंद ले सकते हैं। बीन्स को कुचलने और अपनी उंगलियों से चपाती का एक टुकड़ा तोड़ने से भोजन का आनंद बढ़ जाता है। ऐसा करने पर, आप न केवल सुंघने और स्वाद लेने में सक्षम होते हैं, बल्कि भोजन को महसूस करने में भी सक्षम होते हैं।”

उन्होंने कहा, “हम खाने के लिए दाहिने हाथ का उपयोग करते हैं, तथा अन्य काम करने के लिए बाएं हाथ को साफ रखते हैं, जैसे गिलास पकड़ना और दूसरों को चीजें देना।”

पारंपरिक खान-पान से मिलने वाले आनंद के बावजूद, पश्चिमीकरण दक्षिण एशियाई देश में फैल गया है।

उन्होंने कहा, “बढ़ती संख्या में भारतीय परिवारों ने अपनी उंगलियों का उपयोग करने के बजाय यूरोपीय परिवारों की तरह चाकू और कांटों का उपयोग करना शुरू कर दिया है।” “यह भारत में एक तरह का फैशन बन गया है।”

लेकिन कुछ लोग अभी भी अपनी उंगलियों से खाना पसंद करती हैं। “यह भोजन को और अधिक स्वादिष्ट बनाता है,” उसने कहा।

औषधिक लाभ

व्यंजनों में स्वादों का एक जटिल संयोजन प्रदान करने के अलावा, भारतीय मसालों का उपयोग औषधियों के रूप में भी किया जा सकता है।

“जब आप बीमार पड़ते हैं, तो आप संभवतः सबसे पहले दवा के लिए किसी फार्मसी में जाते हैं। लेकिन भारतीय लोग सबसे पहले पारंपरिक भारतीय मसालों को इस्तेमाल करते हैं। मसाले अधिक स्वास्थ्यवर्धक होते हैं और दुष्प्रभाव रहित होते हैं,” गांधी ने कहा।

“ये उपचार प्रभाव किसी विशेष मसाले के लिए अद्वितीय नहीं हैं। यहां तक कि हल्दी, काली मिर्च और मिर्च पाउडर जैसे सबसे बुनियादी मसालों के भी अपने औषधीय लाभ हैं।”

उन्होंने कहा, “आमतौर पर करी में इस्तेमाल होने वाली हल्दी

में जीवाणुरोधी प्रभाव होता है।” और कहा “दूध में हल्दी उबालकर पीने से सर्दी के लक्षणों से राहत मिलती है, जबकि सरसों के तेल में पकाई गई हल्दी को चोट वाली जगह पर लगाने से भी राहत मिल सकती है।”

“सर्दी-जुकाम में भी काली मिर्च फायदेमंद होती है।” उन्होंने कहा, “काली मिर्च को पानी में उबालकर उससे चाय बनाने से शरीर को गर्माहट मिलती है।”

“पेट की समस्याओं के लिए जीरा और अजवाइन फायदेमंद होते हैं।” गांधी ने कहा कि “जीरे को सेंककर, पीसकर और दही में मिलाकर खाने से पाचन क्रिया बेहतर होती है।”

“हालांकि यह सच है कि मसालों का उपयोग करने वाले उपचार किसी बीमारी पर तत्काल प्रभाव नहीं डालते हैं, लेकिन वे लंबे समय में आपके शरीर की रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता का निर्माण करते हैं।”

रात्री का सन्देश

- सुनील शर्मा

विहान का पारिश्रमिक चुकाने
आ गहराती है नटी रात्री॥
जिसके सुखमय आंचल में
जा सिमटता है जीवनयात्री॥

बाह्य कलुषता में गुप्त है
अकथनीय उज्ज्वलता॥
शान्त निर्जलता में सुप्त है
अवर्णनीय प्रज्ज्वलता॥

नव प्रभात के लिए संदेश
आ गहराती है नटी रात्री॥
जिसके विलासमय आंचल में
जा उभरता है जीवन यात्री॥

अंधेरों से विचलित ना हो
प्रज्ज्वलित संदेश है रात्री॥
कल से नवजीवन आरंभ हो
मधुर संकल्प साक्षी है रात्री॥

विहान का पारिश्रमिक चुकाने
आ गहराती है नटी रात्री॥
जिसके सुखमय आंचल में
जा सिमटता है जीवनयात्री॥

मेरे अतीत के कुछ पन्ने

- ताइतो बुन्का यूनिवर्सिटी के तेईस साल

- इन्दिरा भट्ट

विस्मृति मानव जीवन के लिए वरदान मानी गई है। कहा जाता है कि यदि हर स्मृति सदा बनी रहे तो यह संसार आह और कराह से भरा रौरव ही रह जाएगा। लेकिन कुछ स्मृतियाँ सुरभि के समान होती हैं जो गुलाबों के मुरझा जाने पर भी महकती रहती हैं और बीते हुए कल यानी अपने अतीत को पुनर्जीवित करने के लिए उन स्मृतियों का सहारा लिया जा सकता है। आज मैं भी अपने अतीत की उन्हीं स्मृतियों के पन्ने पलटने जा रही हूँ।

1999 के मार्च महीने की सुबह, जब मुझे ताकामुरा जी जो उस समय एन.एच.के में कार्यरत थे, की कॉल आई। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं हिंदी पढ़ाने में दिलचस्पी रखती हूँ? मैंने तुरंत हाँ में उत्तर दिया। उन्होंने बताया कि ताइतो बुन्का विश्वविद्यालय में एक पार्ट टाइम लेक्चरर की पोस्ट खाली हो रही है, वहाँ वर्तमान में कार्यरत डॉक्टर मंत्री अगले साल की मार्च में रिटायर हो रहे हैं और उन्हें अगले साल की अप्रैल से ज़रूरत है।

उन्होंने मुझे मेरा प्रोफ़ाइल भेजने को कहा। मैंने दूसरे ही दिन अपना प्रोफ़ाइल भेज दिया। प्रोफ़ेसर इशिदा जी, जो उस समय ताइतो में हिंदी विभाग के हैड ऑफ़ दि डिपार्टमेंट थे, के साथ एक इंटरव्यू की तारीख एक कॉफी शॉप में तय हुई। मैं निश्चित समय पर कॉफी शाप पहुँच गई थी। जापान में किसी यूनिवर्सिटी के जॉब के लिए इंटरव्यू का मेरा पहला अनुभव था, थोड़ी घबराहट स्वाभाविक थी। जापान आने से पहले अपने देश में भी पढाई खत्म होने के बाद टीचिंग जॉब के लिए एक-दो बार इंटरव्यू दिए थे उस समय इंटरव्यूअर्स (इंटरव्यू लेने वाले) के कठोर चेहरे याद करूँ तो उसकी तुलना में सरल, सौम्य और हँसमुख स्वभाव के इशिदा जी मुझे बहुत अच्छे लगे। इशिदा जी ने मुझसे हिंदी में कुछ सवाल किए और कहा कि वे अपना निर्णय यूनिवर्सिटी की इंटरव्यू कमेटी को बता देंगे। इशिदा जी उसी अप्रैल से एक साल के लिए अपने किसी रिसर्च वर्क के संदर्भ में भारत जा रहे थे और साल २००० मार्च में ही लौटकर आने वाले थे। बात आई, गई और खत्म हो गयी। मैं भी इस बात को क़रीबन भूल ही गयी थी कि अचानक सितम्बर के महीने में यूनिवर्सिटी से एक पत्र मिला जो मेरा नियुक्ति पत्र था जिसमें मुझे पहली अप्रैल से यूनिवर्सिटी ज्वाइन करने की सूचना दी गयी थी। इन छह महीनों में मेरी दुनिया ही बदल गयी थी। जब मुझे इंटरव्यू की कॉल आई थी उस समय भट्ट साहब मेरे पति अस्पताल में थे और जब नियुक्ति का पत्र मिला उस समय वो दिवंगत हो चुके थे। मैं ज़िंदगी के बहुत उतार चढ़ाव के दौर से गुज़र रही थी। मेरी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गयी थी। कुछ निर्णय नहीं ले पा रही थी कि जापान में रहूँ या भारत लौट जाऊँ।

छात्र जीवन में पढ़ी किसी कवि की लिखी ये पंक्तियाँ अनायास ही याद आ गई-

“अदृश्य आत्मा की तुम सुवास हो गए,
परिधि तोड़ पार्थिव आकाश हो गए,
हम प्रश्नवाची चिन्ह से अवाक रह गए,
तुम देखते ही देखते इतिहास हो गए।”

जब भट्ट साहब गए तो ऐसा लगा कि जैसे ज़िंदगी रुक गयी है। पर ज़िंदगी रूकती कहाँ है सिर्फ जीने की वज़ह बदल जाती है।

अप्रैल 2000 के दूसरे हफ़्ते के शुक्रवार से मेरी कक्षाएँ शुरू होने वाली थी।

यूनिवर्सिटी का पहला दिन :

मैं यूनिवर्सिटी पहुँची। टोक्यो के आउटस्कर्ट्स में सुन्दर प्राकृतिक वातावरण में बनी दाइतो बुन्का यूनिवर्सिटी लगभग दस हज़ार छात्र-छात्राओं का विश्वविद्यालय है। इशिदा सेन्सेई के साथ मैं कक्षा में गई। सेन्सेई ने छात्र-छात्राओं से मेरा परिचय कराया। हमारी यूनिवर्सिटी में जापानी भाषा का आना भी नियुक्ति की एक आवश्यकता थी। इसलिए छात्र-छात्राओं से संवाद में कोई परेशानी नहीं हुई।

मेरी शुक्रवार को सुबह की दो कक्षाएँ होती थी और इशिदा सेन्सेई की दोपहर की। मेरी कक्षाएँ लंच के पहले खत्म हो जाती थीं लेकिन मैं सेन्सेई के साथ लंच करने के बाद ही घर लौटती थी। बच्चे सेन्सेई से बहुत घुले-मिले थे और लंच में २-४ बच्चे हमेशा सर के कमरे में ही आकर हमारे साथ लंच करते।

(मैं अपने छात्र जीवन को भी हमेशा याद करती कि हमारे ज़माने में हम अपने अध्यापकों से इतना डरते थे कि साथ में लंच करने की तो सोच भी नहीं सकते थे)

हमारे विश्वविद्यालय में हर साल गरमियों की छुट्टियों में द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्राएँ क्षेत्र परीक्षण के लिए भारत जाते हैं। मैं भी छुट्टियाँ प्रारम्भ होते ही भारत चली जाती हूँ। ट्रेवल एजेंसी होने के कारण कई सालों तक मुझे अपनी यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग का टूर हैंडल करने का भी मौका मिला। टूर के दिल्ली प्रवास के समय एक दिन मैं भी बच्चों को अपने घर पर डिनर पर बुलाती थी और उनका भारतीय संस्कृति से परिचय करवाती थी। इससे जापानी बच्चों को हिंदी बोलने का, भारत में पारिवारिक सम्बन्धों को निकटता से देखने का जो अवसर मिलता है वो क्लासरूम स्टडी से कहीं ऊपर है।

हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार जैसे महादेवी वर्मा, जैनेन्द्र कुमार, उदय प्रकाश, धर्मवीर भारती आदि विद्वानों का सानिध्य भी इशिदा जी को भारत प्रवास के दौरान मिला था। उन सबके साथ के सेन्सेई के संस्मरण सुनकर बहुत अच्छा लगा क्योंकि अपने माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा काल में हिंदी के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कुछ कहानियाँ जैसे महादेवी वर्मा की किस्मत, कदम्ब के फूल, सुमित्रानन्दन पन्त का छायावादी काव्य पढ़ते हुए ये सभी लेखक और कवि मेरे श्रद्धा के पात्र हुआ करते थे और मैं सोचती थी कि यदि कभी इनसे मिलने का सौभाग्य मिला तो मैं धन्य हो जाऊँगी।

एक बार मुझे उर्दू सीखने का भी शौक चढ़ा। इशिदा सेन्सेई ने मुझे उर्दू की किताबें दीं और मैंने पढ़ना शुरू भी किया। उर्दू में सिर्फ 35 अल्फाबेट्स होते हैं इसलिए वहाँ तक तो सीख लिए पर आगे कंटिन्यू नहीं कर सकी। आखिर सीखने की भी एक उम्र होती है, तभी तो यह कहावत बनी है कि “अब पछताएँ होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।” लेकिन अपने विद्यार्थियों को देखकर अक्सर ये विचार आया कि काश विद्यार्थी जीवन में जापान आकर इस यूनिवर्सिटी में पढाई करने का मौका मुझे भी मिला होता।

प्रो. इशिदा जी २०२० में विभाग से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। २०२० के कोरोना के संक्रमण काल के बाद से स्थितियाँ बदल चुकी हैं। हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या निरंतर घट रही है।

मुझे भी यहाँ हिंदी पढ़ते हुए 23 साल हो गए हैं। माया सुजुकी जी अब विभाग की जिम्मेदारियों को संभाल रही हैं और आशा है कि दाइतो बुन्का का हमारा हिन्दी विभाग भी नई ऊँचाइयों को छूता रहेगा।

हमारा भारत

- आनंद विजय सिंह

भारत कालापानी के दीवारों पर शहीदों के खून से लिखा अभयगाथा है!

हिन्द महासागर के गर्जन में प्रतिध्वनित ओंकार है,
यह हिमालय पर लहराता तिरंगा है!

बुद्ध और गांधी का, महाराणा और कुँवर का नया गीता है,
भगत सिंह और सुभाष का जय हिन्द है !

हड़प्पा और मोहनजोदारो का शिव वंदना है,
चाँद पर फहराता विजय तिरंगा है!

गंगा यमुना से निकली नई संस्कृति है,
हृतात्माओं का लिखा अमिट वेद है!

ऋषियों और मुनियों का गाया जयगान है,
चाणक्य और अशोक का अमर धर्मशास्त्र है!
कोटि कोटि कंठों से निकल राष्ट्रगान है!

नया साल

- त्रीभुवन खंडेलवाल

एक साल और आ गया हम को नसीहत करके
वक्रत के साथ हर एक साल गुज़र जाएगा
आज जो वक्रत हे चढ़ते हुए सूरज की तरह
कल यही वक्रत भी नज़रों से उतर जाएगा

क्यूँ ना इस साल के सीने में वह तस्वीर बने
जो की हर दौर में इंसान की तक्रदीर बने

यूँ तो साल आते हे आकर के गुज़र जाते हे
छोड़ जाते हे, मगर ऐसे कुछ इबंरत के निशाँ
जिन से इंसान अगर चाहे तो कर सकता हे
मुल्क और क्रौम की बहबूदी का बेहतर समा

आओ हम देख लें फिर डालके माज़ी पर नज़र
नये साल के लिये तैयार करे राहे गुज़र

यह नया साल, जवा साल इरादे लेकर
एक नये दौर की तारीख में ढलने के लिए
कह रहा है की में काफ़ी हूँ
गम ज़दा क्रौम की तक्रदीर के लिए

वरना हर साल की मानिंद चला जाऊँगा
और गये वक्रत की मानिंद ना फिर आऊँगा

क्यूँ ना इस साल को पैगामे मुसरत समझे
इसकी हम क्रदर करें इसकी हकीकत समझे
वक्रत जो हमको मिले उसको गनीमत समझे
काम हम ऐसा करे जिसको इबादत समझे

ज़िंदगी यानी हमारी हो इबादत की तरह
जो ना कभी मिट सके धूँओं की तरह।

आशियाना

- सेजल मेहता

वो जो माँ की कोख में है
या जो पापा की हिफाजत में है बसा
क्या बुजुर्गों की दुआओं में छुपा है
या ज़िंदा है अपनों के प्यार भरे जज़्बातो में...

इसे घरोंदा कहे या कहे इसे घोंसला
बसेरा कहें इसे या माने उसे घर
कुटीर कहें इसे या आश्रम सा लगे ये
आशियाना वहीं है जहां बस जाए यह दिल ...

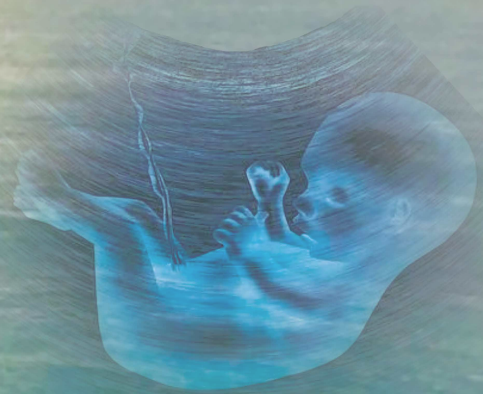
दिल है वहां जहां है इक सुकून
है शांति जहाँ और अमन भी वहीं
ठिकाना है वहीं जहां हासिल हो पुश्त पनाह
और आशियाना वहां जहां मिल जाए तहफ़्फ़ुज़...

क्या पुरखुलूस जहाँ इसी का नाम है
जो किसी की निगाहों में कहीं नजर आ जाए
या किसी की आवाज़ में सुनाई दे जाए
क्या किसी के मुस्कुराने से ये एहसास जगाए
या कभी किसी के आगोश में महसूस हो जाए...

माँ की कोख से टहलते टहलते
रिश्तों की नजाकत सम्भालते सम्भालते
यूँही उलझनों की सिलवटों को संवारते संवारते
हर एक मोड़ पे मुसलसल ढूँढते ढूँढते
बढ़ते चले हम, अपने आशियाने की और...

पुरसुकूँ एतमाद की तलाश में जब आगे बढ़े हम
रोशन दायरे की खोज में एक दिए को लिए
खुद ही के रूहानी वुजूद की जुस्तजू में
खुद को खुद ही से जुदा करते हुए
अब कब खत्म होगी यह तहक़ीक़ हमारी
और मिल जाए हमें, एक जगह फलक पर ...

यूँ कोख से जन्नत की मंज़िल तय करते करते
बसेरे तो आते हैं राह में अनगिनत
मगर यह दिल हर बार कहता रहे
जब तक मुकम्मल जन्नत नहीं हासिल
तब तक हमें ना मिले ख्वाबों की ताबीर कहीं
ना ही एक पाक आशियाना कहीं ...



しあわせは海の向こうから

- しずく まゆみ



こんにちは！ 初めまして。

日本で生まれて、日本で育って、日本で生活しています。今回は日本ではお馴染みの七福神の神さまとしあわせがどこから来たのか、いろいろ考えてみたいと思います。

日本は古代より万物には神さまが宿っているという信仰があって、八百万(やおよろず)の神さまがいらっしゃいます。

インドも古代よりの神さまが大勢いらっしゃるようですね。ワーオ！ 日本とよく似ていますね。

さて日本でお馴染みの七福神。この7人の神さまの中で唯一、日本生まれはたった1人。

ほかの6人の神さまはどこから来たの!?

気になったので調べてみると、6人の神さまは他の宗教から日本に来た神さまでした。

中国の仏教からは布袋さま。同じく中国の道教から福祿寿さまと寿老人さま。そしてさらに離れたインドのヒンズー教からは大黒天さま・毘沙門天さま・弁財天さまの3人の神さまがいらっしゃいました。

七福神の神さまの中で「〇〇天」と付くのはインドの神さまを表すのだそうです。昔の表現で、インドのことを「天竺」と呼んだこと

と関係があるのかもしれませんが。

ほかの宗教から来たこの6人の神さまと日本生まれの神さまである恵比寿さまがなぜ同じ船に乗っているのか、とても不思議です。

それについて有力な情報はないので、勝手気ままな想像をしてみると…。

まずは恵比寿さま。恵比寿さまは元々のお名前は蛭子(ひるこ)だとか。たしかにこの字面なら納得です。ひるこは日本(やまと)を生み出したイザナギとイザナミという夫婦神の第1子です。不具のからだでお生まれになったので、海に流されたというお話が残っています。

ここからは勝手な想像ですが、海に流れていたところをきつと他の6人の神さまに出会ったに違いありません。

そしてヒンズー教から来た大黒天さま。大黒天さまはヒンズー教ではシヴァ神の化身であるマハーカーラだそうです。それが

実は大国主命(おおくにのみこと)とも言われています。となるとマハーカーラはいつ日本に来たのか疑問が出てきます。さらに想像力を膨らませて、海に流されたひるこが心配になって、助けに海に出たのかもしれませんが。海ではどんな旅をしていたのでしょうか？ 旅というより冒険に近い旅だったのかもしれませんが。

七福神の中で唯一の女性の神さまである弁財天さまは恵比寿さま(ひるこ)のことをきつと可愛がられたことでしょうか。子守歌がわりに琵琶の音色を奏でる時もあつたと思います。

毘沙門天さまについてもイメージしてみましょう。武将のお姿なので、冒険旅の中ではキャプテン(船長)のような役目を果たしたのかもしれませんが。

そしておじいさんの姿で描かれる福祿寿さまと寿老人さまは健康や長寿を司っているので、2人で料理を担当したかもしれません。海にはいろいろな生物がいて、中には毒をもつ生き物もいるので、食べられるかどうか不明な場合は、学問も司る弁財天さまから智慧を頂いたに違いありません。

最後は布袋さまです。丸いお腹でニコニコ笑顔。布袋さまといえば白い堪忍袋を持っています。そんな布袋さまの役割は、いざこざやケンカのもつめ役。海の上の船旅ですから、旅の最中にはいざこざだつて起きるでしょう。それを布袋さまが「まあまあ、ケンカなんかしないで…」とイライラの思いを堪忍袋に押し込んで場を和ませたかも…。

やがて7人の神さまを乗せた船は恵比寿さまのふるさつである日本へたどり着きました。神さまを乗せた船は宝船と言って、幸せを運んでくると言われています。七人の神さま。日本に来てくれてありがとう！



ネタジ・スバス・チャンドラ・ボース 七十九回忌法要と『ネタジ文庫』

－ 佐々木 理香

『ネタジ文庫』

ネタジ・スバス・チャンドラ・ボースはインド独立運動の指導者であり、今日も「ネタジ」(統領・指導者)の愛称で呼ばれている人物です。ネタジ率いるインド国民軍が、ビルマ方面からインドのコヒマ、インパール地域に展開し、そこにインド国旗を掲揚したことが、インドの独立を早めることになりました。ネタジの活動を後世に伝えるべく、私共 チャンドラ・ボース生誕125年記念実行委員会は、昨年インド大使館図書館に『ネタジ文庫』を開設し、ネタジやインパール作戦の関連書籍を寄贈しました。昨年は日印国交樹立70周年・インド独立75周年、そしてネタジ・スバス・チャンドラ・ボース生誕125周年であり、関連行事として昨年9月2日(金)インド大使館に於いて講演会・オンライン(ZOOM配信)の同時開催および『ネタジ文庫』寄贈式典を開催し、ネタジの功績を日本とインドの専門家が多面的に考察しました。本講演会の資料やYouTubeは同実行委員会のホームページ(<http://chandrabose125japan.com/>)に掲載されています。

七十九回忌法要と蓮光寺

スバス・チャンドラ・ボース(1897-1945)はガンジーやネルと並び称されるインド独立運動の英雄です。第二次世界大戦が勃発すると、ボースはインド国民軍(INA)司令官に就任。日本と協力して英国軍の前線基地であるインド領インパールに反撃する作戦(いわゆるインパール作戦)に加わりましたが、作戦は失敗に終わり、昭和20年(1945年)8月15日、日本の敗戦後も旧ソ連と結んで北からインドへ侵攻する計画でソ連に向かう途中、台北で飛行機事故に遭い亡くなりました。しかし、ボースが生涯をかけた祖国独立の闘いは、やがてインドの民衆の心の中に自由と独立への希望を燃え上がらせ、それが昭和22年(1947年)8月14日のインド独立に繋がっていったのでした。

飛行機事故で不慮の死を遂げたスバス・チャンドラ・ボースの遺骨は、台湾の日本軍司令部から東京の参謀本部へ、そしてインド独立連盟の関係者へと手渡されました。しかし、葬儀を引き受ける寺院がなく、相談を受けた当時29世潤乗院日輝(望月教栄)師は英断をもってこれを引き受け、9月18日に葬儀をとり行いました。ボースの遺骨は、そのまま蓮光寺に安置されることになり、日輝師は仏教者としての信念のもとに遺骨をまもり、供養を続けました。

この間、昭和32年(1957年)にはジャワハルラル・ネル首相がお詣りに来られ、翌33年にはブラサット大統領、さらに昭和44年(1969年)にはインディラ・ガンジー首相も参拝されました。平成2年(1990年)、スバス・チャンドラ・ボース・アカデミーにより、境内に供養碑が建立され、平成6年(1994年)8月18日の命日には百名近い参列者を集めて50回忌法要が挙行され、現在に至っています。今年79回忌はコロナ禍で4年ぶりの法要となります。



日蓮宗 頂光山 蓮光寺



ネタジ胸像



ネタジ軍服姿



インド大使館図書館内『ネタジ文庫』

おじいさんに挨拶

- ロイ れい子

引っ越してきたばかりの時にタオルの小さな箱を持ってご挨拶に伺ったことが隣の一人暮らしのおじいさんと里奈の付き合いの始まりです。付き合いといってもほぼ挨拶するだけのことです。それは大したことではないと思っても、ずっと角の家の窓ぎわの椅子にかけているおじいさんだから、家から出るたびに里奈は挨拶しなければならないのです。おじいさんはもちろんお仕事はとっくに定年退職しているでしょうし、ヘルパーさんのおかげで、家の中でも外の庭でも何もしなくて済むので、里奈が家から一歩出ると、窓の椅子から声をかけてきます。里奈だけでなく誰がその前の道を通っても声がかかります。おじいさんの家と里奈の家は狭い角の両側にあるから、里奈はおじいさんを避けることができません。今まで里奈は朝早く起きてバサバサの髪と乱れた服装で、人が目を覚ます前にごみを持って、さっさと行ってぱっと捨てるというふうにしてきました。ここではおじいさんは誰よりも早起きですので、そして起きてもすることはないので、窓際の椅子に座っています。朝はまだ道を歩く人が少ないため、里奈は見られないことはありません。そういうわけで、今ではごみ捨てに行く時にも着替えて、ある程度きちんとしてから出なければなりません。それだけでは済まないから、ちゃんと挨拶もしなければいけません。

おじいさんはおそらくドアの開く音がするとその方向を見るでしょう。里奈の身体がまだドアから出てないうちにおじいさんの深い声が聞こえてきます。「おはよう。」その方向には向かず、玄関からごみの袋を手に取り、「おはようございます」と返しなが、里奈はまっすぐ向いてゴミ捨て場の方に歩き出します。以前住んでいたところでは、大きな回収場があり、少し離れたところからゴミ袋を軽く投げるだけでした。他の大きいゴミ袋の間に、小さいのがぽつと入ってバランスよく収まるのでした。ここではそういうわけはいきません。カラスがいたずらをするのか、誰かが商売上手だったのか、この町内すべてのゴミ捨て場には、ナイロンの太くて青いロープの網が張られています。それを下から持ち上げてからゴミ袋をその中に入れなければなりません。朝からイライラします。帰りにはまたおじいさんと顔を合わせないと家に入れません。おじいさんはいつもの通り、「今日も元気かい？」と尋ねました。里奈もいつものように笑みを浮かべて、「はい。ありがとうございます。」と言いました。心の中で、私にこうやって声をかけなければもっと元気だったと思う、と言いながらおじいさんにもっと話されたいよう、会釈して家に入っていました。本当におじいさんさえそこにいなかったら、こんな早い時から着替えたりしなくてもよかったし、戻ってからまた布団に入ってあと30分ぐらいでも寝ていたに違いありません。

今日はごみを捨てた後、里奈は濃い目のコーヒーを作って飲むことにしました。頭が痛くなりそうな気がしたので。コーヒーで何とか抑えられますように。そして、仕事に行ってから気がつ

いたのは必要なファイルを玄関に置いたまま忘れてきたということです。玄関を開けた途端におじいさんの声が聞こえて、挨拶したら、ファイルのことを忘れてしまったのでした。ファイルを取りに行くしかありません。家の近くの駅に着いたら、ちょうど昼時でお腹が空っぽの状態だったので、里奈はまず昼ご飯を食べようと決めました。いつも気になっている中華に行くことにしました。とても人気でほとんど満席で、「相席でよければ。」と言われ、あまり時間も取れませんし、近くに他の大したお店もありませんし、このおいしい匂いに誘われて、里奈は「はい。」と言って入りました。食事中の客の斜め向かいに座り、メニューも見ないで昼のセットを注文しました。下を向いて携帯をいじっていたら、店員さんが来て、ご飯が来たのかと思いきや、別のテーブルに移動してほしいとのことでした。二人組が入り、里奈のテーブルに座られるのは都合がよいです。そのもう一方は食事中ということで、里奈は仕方なく席を移ると今度は四人座りのテーブルにすでに二人がいました。里奈は小さくなって座りました。

その後家に戻ると、おじいさんの声がまた聞こえてきました。だから朝忘れ物をしたんじゃないかと里奈は少し苛立ちました。「この人は昼寝もしないのか」。何も聞こえてないふりをして家に入って、ファイルを取ってまたすぐ出たら、今度はおじいさんの声が聞こえてきませんでした。夜遅く帰った時、おじいさんの窓はいつもと同じように閉まっていた。昼のことを思い出して、里奈は少し反省し、明日はおじいさんにきちんと挨拶をすると心の中で決めました。朝出るときに窓は開いていて、珍しくおじいさんはそこにいませんでした。「まあ一トイレかな、あの年だから。」と里奈は思いました。翌朝窓が開いていて、おじいさんの声が聞こえてくるかと思っても何も聞こえませんでした。おじいさんに自分から挨拶しようと思ってから見かけていません。何かあるはずのものがなくて寂しいような気持ちで、里奈は少しがっかりして今まで以上に窓の方を見つめました。

窓の前まで行って首をかしげると、壁際のテーブルの真ん中に大きい白い花束が飾ってありました。「はあー、おじいさんはお花が趣味？」里奈はクスッと笑ううちに何かに気が付きました。白いユリの花束が静止画みたいに里奈の方を見ていました。その後ろの壁に、寄りかかっているように置かれているのはおじいさんの若い時の写真で、笑みを浮かべているように見えます。「なぜ？一体なぜだ。見た目も声もなんの変化もなかったし、前もって分かるはずなんてないじゃない。」今まで、何があっても毎回挨拶をしたのに、一回、たったの一回だけ挨拶をしなかったことを許してもらえないのだろうか。突然里奈は念仏を唱えるかのように、「おじいさん、おはようございます。」と何度も言い続けました。いずれその挨拶が方向を変えて、その狭い道を越えて、近所全体に響き渡って、ついにおじいさんが今いるところまで届くでしょうか。

ひかりの

— 佐藤 洋子

の 決意たに座っても
引きずっている黒い雲 我が心に気づくだけ
涙より耐えがたい 無味乾燥の深奥に
一滴の ひかりのし 感じる

霊性の進歩に 秘訣 近道はなし
ただ 愚直に 実践をつづけるのみ
それしかない それだけしかない と

霊性の道へ 心定めて 踏み出したころ
「規則的」という 言葉に触れた
すでに 知っていた この言葉
風のように 通り抜け 消えた

「規則的に」と言う重み 深さの意味が 付き回る
つかず離れず の なかに浸透していった
気楽に 解釈していた そのことば
霊的な実践の元と 意味知り 心ふるえる

例えどんなに実践が 機械的であろうとも
砂むようであったとて
もよおすほどのこと 繰り返し してしまっても
降っても 照っても ひたすらに ただ 実践を繰り返せ

つまずいた その地点から歩みだす なにも無かった かのよう
意味つけず 意味考えず 歩き出せ
機械的に 歩き出せ
イチ ニ イチ ニ と

霊性の道 水筒に 忍耐という名の水入れて
と ながーく 長く 歩きましょう
最後の息の消えるまで 主のき見えるまで

悲喜こもごもの人生の
あらゆる意味は 何もかも
主が 教えてくださる 時をみて

だから心配することはない 不安がることはない
ばかばかしいこの人生の すべての意味は
主がわからせて くださるのだから

無限の らかさの エッセンス
浄らかそのものの 主が 引っ張っている
途方もない 黒きなにかを ひと知れず

き 吹き飛ばせ に
さようなら 絶望よ
そして 最後の最後には
主の愛の 溢れるに られるだろう
二度と ることのないところ 愛のローカに

霊性の道 とぼとぼと すべての規則守れずとも
愛の権化慈悲の主は 知っておられる何もかも
真っ黒な者 自力で立てない者のため
泥沼に られるわが主 永遠に

何一つ 守れない者よ
覚えておいで そのことを
それを 覚えて いるだけで
の救いを 与えられたも 同然だ
の世界への チケット得たと同じこと

歌え オーム シャーンティ と
唱えよ お前の マントラを
恐怖と不安を破壊する
強烈な薬 グルのマントラ繰り返せ
の 世にあるは 絶え間なく

日本画教室からインドの旅

－ 佃卓治

タージ・マハル Taj Mahal

タージ・マハルはムガル王朝第5代皇帝シャー・ジャハーンが最愛の王妃ムターズ・マハルのために建てた霊廟です。1632年から22年の歳月をかけて造営された、白大理石に各種の貴石が埋め込まれ、世界でも有数の美しい建造物です。

Taj Mahal is built by the fifth Mughal Emperor Shah Jahan over a period of 22 years from 1632 as a tribute to his beautiful beloved wife, the Empress Mumtaz Mahal, and a monument for enduring love. It is one of the most beautiful white marble architecture with exquisite precious-stone inlay works in the world.



アグラ城より望むタージ・マハル

Viewing Taj Mahal from Agra Fort



ムガル王朝第5代皇帝シャー・ジャハーンはタージ・マハルを建てましたが、国の財政を傾けたとして後に、息子によってアグラ城に幽閉されます。アグラ城の部屋からはタージ・マハルを一望することが出来ます。彼は幽閉の8年後に亡くなります。

The fifth Mughal Emperor Shah Jahan built Taj Mahal, but it brought a financial crisis. Shah Jahan was captured in Agra Fort by his son. Shah Jahan gazed Taj Mahal through the grille of Agra Fort room every day until his death of 8 years later